अजायब बानी

मासिक पत्रिका

सितम्बर-2022

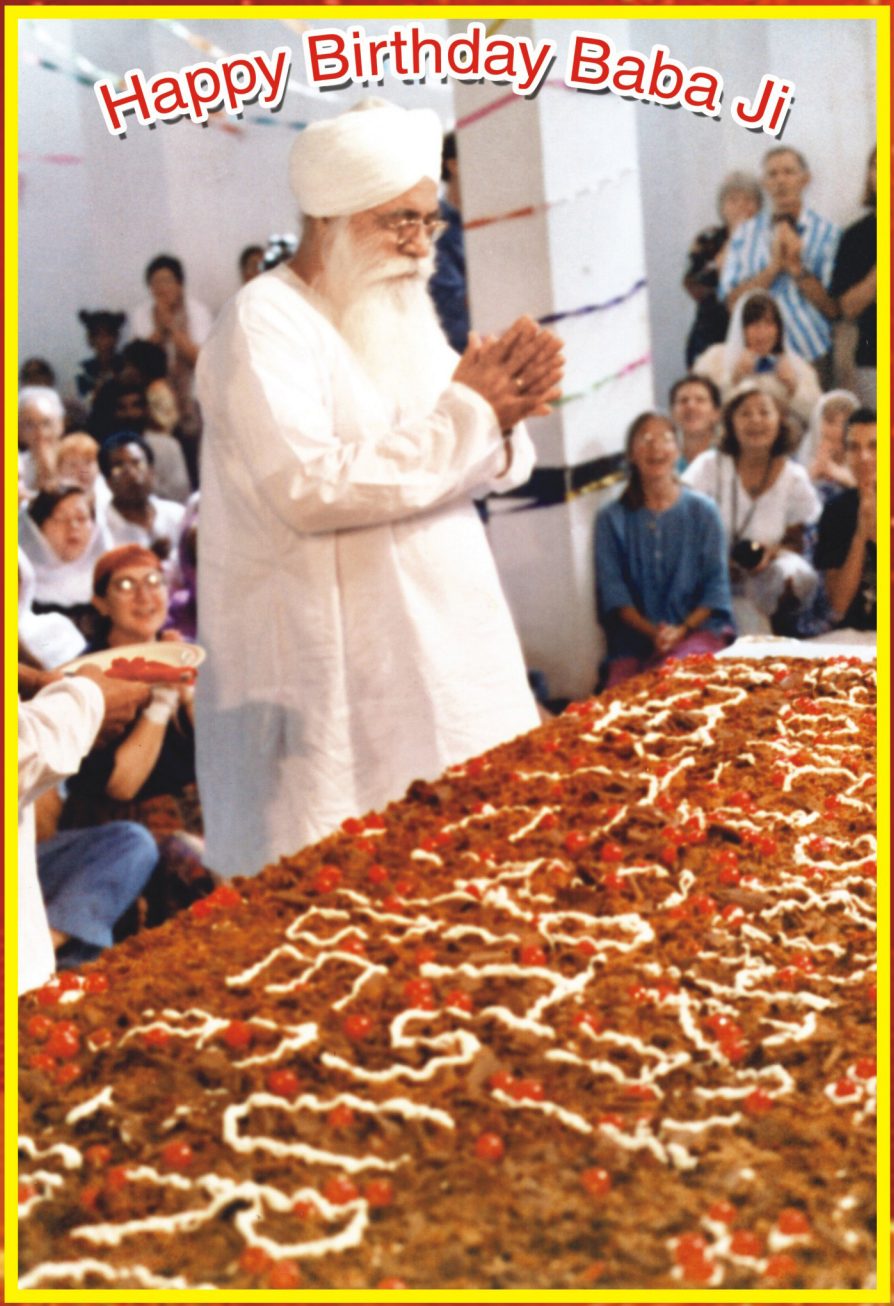

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–बीसवां | अंक–पांचवां | सितम्बर–2022

- बाबा जी का शुभ जन्मदिवस 2
- आत्मा की शादी (सतसंग) 5
- दर्शनों की महानता (सवाल-जवाब) 15
- मेरा फौजी जीवन 23

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **ज्योति सरदाना, डॉ. सुखराम सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 246 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

बाबा जी का शुभ जन्मदिवस - 11 सितम्बर

जनम मरण दुहहू महि नाही जन पर उपकारी आए।
जीअ दान दे भगति लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए।

11 सितम्बर के शुभ अवसर पर संगत को लख–लख बधाइयाँ। यह दिन हमारे लिए बहुत सौभाग्यशाली है। आज के दिन परमपिता परमात्मा 'अजायब' देह रूप धारण करके संसार में आए और हम जैसे मंदभागी जीवों पर अपार दया की वर्षा की।

बाबा जी ने विश्व के चारों कोनों में 'नाम' की गंगा बहाकर अपनी दया दृष्टि से हम जीवों का कल्याण किया और प्रभु भक्ति का उपदेश दिया। सन्त संसार में परोपकार के लिए आते हैं। सन्तों का जीवन दुनिया की भलाई के लिए होता है, वे संसार में प्यार का संदेश देते हैं और सोई हुई आत्माओं को जगाने के लिए आते हैं। बुल्लेशाह कहते हैंः

मौला आदमी बन आया, ओ आया जग जगाया।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज अपने एक भजन में कहते हैंः

बंदा बनके आया, रब बंदा बनके आया।
आ के जग जगाया, रब बंदा बनके आया।

हमारे परमपिता अजायब कहते हैं कि भक्ति एक अमोलक धन है हम इसे मोल से नहीं खरीद सकते, खेतों में नहीं उगा सकते, यह सच्ची इज्जत की दाता है इसलिए हमें सदा भक्ति करनी चाहिए। करोड़ों किताबें पढ़ने से रत्ती भर अभ्यास अच्छा है। आप पढ़ें, पढ़ना अच्छा है, लेकिन सोच समझकर पढ़ें अगर सन्त का एक वचन भी आपके हृदय में बैठ जाए तो आपकी जिंदगी पलट सकती है।

जब गुरु 'नामदान' देता है तो सेवक के अंदर बैठ जाता है, गुरु सेवक को तब तक नहीं छोड़ता जब तक उसे सतपुरुष की गोद में न पहुँचा दे।

आप जब तक आत्मा को खुराक न दें तब तक अपने तन को खुराक न दें। हमारी आत्मा जन्म–जन्म से भूखी है। सदा नित्य–नियम बनाएं। सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं और हजारों काम छोड़कर अभ्यास में बैठ जाएं। आप अपने एक भजन में लिखते हैं :

सौ काम छोड़ सतसंग में जाना, हजार काम छोड़ बंदे ध्यान लगाना।
जितनी जरूरत तन को खाने की, आत्मा भी मांगे सिमरन खाना।

सन्त जागे हुए पुरुष होते हैं। सन्त सदा अपने आपको संसार में छिपाकर रखते हैं, हम उन्हें कैसे पहचान सकते हैं? हमारी आँखों पर मोह–माया की पट्टी बंधी है, वे अपनी पहचान देकर हमारी आंखों की पट्टी उतारते हैं तभी हम देखने के काबिल होते हैं। उनकी शान को देखकर हमारी आत्मा कह उठती है, ''धन्य अजायब तू धन्य है।'' उनके दिव्य रूप के चिंतन से ही हमारे मन का अंधेरा दूर हो जाता है।

सन्त अजायब सिंह जी महाराज अपने सतसंगों में कहते हैं कि सन्त चानण मनारे होते हैं। सारा संसार उनके ज्ञान रूपी प्रकाश से जगमगा उठता है; पहचानने वाले उनको पहचान लेते हैं। इत्र बेचने वाला चाहे इत्र की शीशी को कितना भी कसकर ढक्कन लगाए फिर भी खुशबू बाहर निकल ही आती है। कबीर साहब भी कहते हैं:

कहे कबीर हम धुर के भेदी, लाए हुक्म हजूरी।

इस तरह सभी महापुरुषों ने हकीकत की ओर इशारा किया है। महाराज अजायब ने भी अपने भजनों में अपनी हकीकत को बताया है:

किसे काम के थे नहीं कोई ना कौडी दे।
कृपाल सिंह सतगुरु मिलया भई अमोलक देह।
दूसर का बालक होता भक्ति बिना कंगाल।
कृपाल गुरु कृपा करी हर धन दे कियो निहाल।

सच्चा देश सच तख्त सुहाया, दास 'अजायब' कृपाल ध्याया।
सन्त दया बरस रही, बाहर मन भूला फिरे।
अंदर जोत जल रही, बाहर मन भूला फिरे।

सतगुरु कृपाल ने अपने प्यारे गुरमुख अजायब से कहा, ''तुम्हारे अंदर से खुशबू आएगी और वह खुशबू सात समुन्द्र पार चली जाएगी।'' आगे चलकर यह भविष्यवाणी सच हुई। दुनिया के हर कोने से प्रेमी खिंचे हुए चले आए। स्वामी जी महाराज कहते हैं :

भक्ति करे पाताल में प्रकट होये आकाश।

आओ, हम सब मिलकर अपने सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज के बताए मार्ग पर चलें और उनके वचनों पर अमल करें। वे कहा करते थे, ''मेरी देह से ज्यादा मेरे वचनों की इज्जत करें। परमात्मा आपके अंदर है जो मेहनत करेगा उसे फल अवश्य मिलेगा। मेहनती आदमी सदा कामयाब होता है। अपने जीवन को पवित्र बनाएं ताकि यह धरती आपके ऊपर मान करे कि कोई अच्छा इंसान इसके ऊपर रहता है। आपकी अच्छाई की खुशबू आपके पड़ोसी को भी आए कि ये किसी अच्छी जगह पर जाते हैं।''

आओ, आज हम इस पवित्र व शुभ अवसर पर उनके बताए मार्ग पर चलने की प्रतिज्ञा करें और सब मिलकर यह भजन गाएं:

आ सजणा चल शगन मनाईऐ।
रलके मनाइये सारे हसिऐ ते गाईऐ।
जन्म दिहाड़ा अजायब सोहणे सजण दा।
भागां नाल आया दिन साडे हसण दा।
खुशियां च सारे कैहंदे जश्न मनाईऐ।

परम पिता परमात्मा सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज के पवित्र शुभ जन्मदिवस पर एक बार फिर संगत को लख–लख बधाइयां।

***

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

29 सितम्बर1987
16 पी.एस.राजस्थान

आत्मा की शादी

गुरु नानकदेव जी की बानी DVD - 533(2)

उस बहुरंगी परमात्मा ने अपनी रचना अपने–आप ही रची है। कहीं पक्षी हैं, कहीं पशु हैं, कहीं इंसान हैं, कहीं देवी–देवता और गंधर्व हैं। वह सबकी रचना रचकर आप ही सहायता कर रहा है। गुरु साहब कहते हैंः

आपे रचना रची बहुरंगी, आपे भया सहाई।

मैं आपको एक मिसाल देकर बताऊँगा, आप गौर से सुनें और समझें। एक बादशाह की एक लड़की थी। हिन्दुस्तान के रिवाज के मुताबिक यहाँ माता–पिता अपना फर्ज समझकर लड़की की शादी करते हैं। माता–पिता ही लड़की के लिए लड़का ढूंढते हैं, वही लड़की को पसंद होता है। बादशाह ने मुनियादी करवा दी और यह शर्त रखी कि जो नौजवान मुझे सूरज छिपने से पहले ढूंढ लेगा, मैं उससे अपनी लड़की की शादी कर दूँगा और उसे अपना सारा राजपाठ दे दूँगा क्योंकि मेरा कोई लड़का नहीं।

जब यह शर्त रखी गई तो कई नौजवान उतावले होकर अपने घरो से निकले कि एक पंथ दो काज। लड़की भी मिलेगी और राजपाठ भी मिल जाएगा। बादशाह माली का भेष बदलकर एक बाग में जाकर बैठ गया। बादशाह ने अपने राज्य में हर किस्म के इंतजाम कर दिए। कहीं वेश्याएं नाच कर रही थी, कहीं मीट बन रहा था, कहीं अच्छे–अच्छे राग हो रहे थे कि नौजवान किसी न किसी में फँस जाएंगे।

जिसे कान का विषय था, वह राग में मस्त हो गया। जो स्वादु था, वह अच्छे खानों पर मस्त हो गया। जो रूप का शौकीन था, वह सुंदर औरतों पर मस्त हो गया। जिसकी जैसी इच्छा थी, वह वैसे भोगों में लगकर बादशाह की लड़की के साथ शादी करवाना और राज्य लेना भूल गया।

एक मजबूत दिल वाला, अच्छे ख्याल वाला नौजवान था। उसने अच्छे खानों, रूपों और रागों की परवाह नहीं की और सोचा पहले बादशाह को ढूंढना चाहिए। जब बादशाह मिल जाएगा तो ये चीजें अपने आप ही मिल जाएंगी। उस नौजवान ने सारा दिन, हर ऊँची–नीची जगह पर बादशाह की तलाश की। आखिर जब सूरज छिपने वाला था तो वह नौजवान बाग में गया उसने देखा कि वहाँ बादशाह माली के रूप में काम कर रहा था।

वह नौजवान साफ दिल था, उसने किसी भी स्वाद की तरफ तवज्जो नहीं दी। नौजवान ने जब माली के माथे और आँखों की तरफ देखा तो उसने महसूस किया कि यह माली नहीं हो सकता, बादशाह ही माली के भेष में है। उस नौजवान ने बहुत दिलेर होकर कहा, ''बादशाह सलामत, मैंने आपको ढूंढ लिया है आप ही बादशाह हैं। अब आप अपनी दया–दृष्टि करके अपना वायदा पूरा करें।''

इसी तरह परमात्मा अपनी आत्माओं को इस दुनिया की राजधानी में भेजता है। यहाँ विषय–विकारों के चोगे बिखरे हुए हैं। किसी को आँख का, किसी को कान का, किसी को नाक का, किसी को जुबान का विषय है। वह परमात्मा हम जीवों की खातिर मल–मूत्र का चोला धारण करके आता है। परमात्मा रूपी बादशाह भी चाहता है कि मैं अपनी भक्ति रूपी कन्या को कुँवारी न रखूं, किसी के साथ इसकी शादी कर दूँ।

परमात्मा भी उस बादशाह की तरह शर्त रख देता है कि जो मुझे ढूंढ लेगा मैं उसके साथ अपनी लड़की की शादी कर दूँगा। जिस तरह उस मजबूत दिलवाले नौजवान ने बादशाह को ढूंढ लिया था उसी तरह परमात्मा भी गुरु का भेष बदलकर हमारे बीच आकर रहता है। मजबूत दिल वाले दुनिया के विषय–विकारों में अपना समय खराब नहीं करते, वे गुरु की आँखें और माथा देखकर परख लेते हैं कि यह इंसान की देह में जरूर रहता है लेकिन यह इंसान नहीं, बादशाह परमात्मा है।

इसी तरह सब सन्तों ने आमतौर पर आत्मा को कुँवारी कन्या कहकर बयान किया है और परमात्मा को पुरुष कहकर बयान किया है। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

कुँवारी सुरत करे व्याभिचारा, मन इन्द्री के फिरती लारा।

जब तक **आत्मा की शादी** 'शब्द गुरु' के साथ नहीं हो जाती तब तक हमारी आत्मा कुँवारी है। दुनिया की शादियाँ टूट जाती हैं, पति–पत्नी परेशान होते हैं लेकिन शब्द गुरु के साथ हुई **आत्मा की शादी** नहीं टूटती। दुनिया की शादी में या औरत विधवा हो जाती है या पति विधुर हो जाता है। संसार छोड़ने पर कोई एक–दूसरे का साथ नहीं देता। जो महात्मा अंदर जाते हैं, उन्होंने सच्चाई को देखा है और बयान किया है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

हरि की नार सु सरब सुहागण रांड न मैलै वेसे।

महाराज जी कहा करते थे, ''हम सब आत्मा है, आत्मा परमात्मा की अंश है। यह शरीर तो हमें हमारे कर्मों का भुगतान करने के लिए मिला है। किसी को पत्नी का रोल मिला है, किसी को पति का रोल मिला है।''

प्यारेयो, इस सच्चाई को समझना बहुत मुश्किल है। जो अंदर जाते हैं उन्हें पता है जिस तरह हम बाहर शादी की रस्म करते हैं उसी तरह अंदर भी **आत्मा की शादी** की रस्म होती है। जब पूरे गुरु नामदान देते हैं वे शब्द–रूप होकर इस परमात्मा की अंश आत्मा के साथ इसी तरह ही शादी की रस्म करते हैं। जब शादी हो जाती है तो पति की मर्जी वह जब चाहे औरत को लेकर जा सकता है, जहाँ चाहे उसे रख सकता है। पत्नी उसकी आज्ञाकार होती है वह कभी भी पति की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करती।

इसी तरह एक बार जब शब्द गुरु के साथ **आत्मा की शादी** हो जाए तो वह जब चाहे अपनी आत्मा को अपने पास बुला सकता है। कई बार हम नाम लेकर, शब्द के साथ शादी करवाकर अलग चले जाते हैं, दिल

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

में ख्याल आता है कि हमने इस रास्ते को छोड़ दिया है। हमारा जातिय तजुर्बा है सेवक ऐसा कभी नहीं कर सकता अगर बाहर से करता है तो शब्द रूप गुरु जो उसके अंदर बैठा है, उसे नहीं निकाल सकता। आत्मा जहाँ भी जाए शब्द गुरु वहाँ जाकर उसकी संभाल करता है, उसे अपने चरणों में लगाता है अगर दुनिया में बैठकर उसने ज्यादा परेशानियों वाले कर्म कर लिए है तो गुरु उसे फिर संसार में भेजता है।

मैं बताया करता हूँ कि जो भी अंदर गया वह सन्तमत को झुठला नहीं सका, उसने सच्चाई को दुनिया के आगे रखा। सन्तमत परियों की कहानी नहीं लेकिन हम उस परमात्मा के मिलाप को बयान नहीं कर सकते। कबीर साहब कहते हैं, ''यह गूँगे का गुड़ है, अगर गूँगे से गुड़ का स्वाद पूछें तो वह स्वाद नहीं बता सकता, सिर्फ कंधे ही हिला सकता है।'' इसी तरह जो मालिक के प्यारे अंदर जाते हैं वे **आत्मा की शादी** का जिक्र करते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

तोरी न तूटै छोरी न छूटै ऐसी माधो खिंच तनी

गुरु हमारी डोरी को अंदर सच्चखंड में इस तरह बाँध देते हैं कि हम उस डोरी को तोड़ नहीं सकते, छोड़ नहीं सकते। मन का साथ लेकर हम थोड़े दिन के लिए भटक जाते हैं आखिर हम वापिस उसी रास्ते पर आ जाते हैं। सन्त–महात्मा इस दुनिया में आकर कुदरत के नियमों के मुताबिक ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं। वे अपने गुणों की कोई नुमाइश नहीं लगाते, वे यह दम नहीं मारते कि हम कुछ हैं। कबीर साहब कहते हैंः

जिन पाया तिन्हें छिपाया

आज से तीन–चार सौ साल पहले हिन्दुस्तान में स्कूलों का कोई खास प्रबंध नहीं था। सारे हिन्दुस्तान में विद्या का केन्द्र काशी ही था। जब गुरु नानकदेव जी वहाँ गए तो आपका मिलाप एक गोपाल पंडित से हुआ। गोपाल पंडित ने चार वेद, सत्ताईस स्मृतियाँ, अठारह पुराण पढ़े हुए थे।

वह गुरु नानकदेव जी के पास चर्चा करने के लिए आया। उसने देखा कि गुरु नानकदेव जी शान्त मूर्ति हैं, नाम के रसिए हैं तो उसने कहा, ''मैं पढ़ा–लिखा तो बहुत हूँ लेकिन मेरे मन को शान्ति नहीं।'' गुरु नानकदेव जी इस शब्द में उसे प्यार से समझा रहे हैंः

जै कारणि बेद ब्रहमै उचरे संकरि छोडी माइआ।।
जै कारणि सिध भए उदासी देवी मरमु न पाइआ।।

गुरु नानकदेव जी ने गोपाल पंडित से कहा, देख प्यारेया, चार वेदों की रचना करने वाला ब्रह्मा था। ब्रह्मा को भी यह ख्याल था कि अच्छे ग्रंथ लिखने से मुझे परमात्मा मिल जाएगा, मेरे मन को शान्ति आ जाएगी लेकिन ऐसा नहीं हुआ। आपने अनुराग सागर में ब्रह्मा, विष्णु और शिव की कहानी पढ़ी है कि किस तरह शिव ने एक अवधूत जिंदगी जीने के लिए बाहर डेरा लगाया हुआ था कि हमने दुनिया से क्या लेना है? आखिर काल भगवान ने उसकी जो ड्यूटी लगाई थी उसे वह निभानी पड़ी।

ब्रह्मा के मन को शान्ति नहीं थी। उसे किस तरह काम इन्द्री ने जलील किया, उसने क्या कर्म किए यह आप अनुराग सागर में पढ़ चुके हैं। परमात्मा अक्षरों में नहीं, वह बेअक्षर है। जो परमात्मा को अक्षरों में ढूंढते हैं उन्हें आज तक परमात्मा नहीं मिला। जब इस पवित्र ग्रंथ को लिखने वाले को शान्ति नहीं मिली, उसे परमात्मा नहीं मिला तो पंडित जी ग्रंथ पढ़कर आपको कैसे शान्ति आ सकती है? गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

अखर पढ़ पढ़ भुलीऐ भेखी बहुत अभिमान

बाबा बिशनदास जी उस जमाने के ज्यादा से ज्यादा पढ़े–लिखे थे। उन्होंने भी काफी धर्मग्रंथ पढ़े थे, उन्हें दुनियावी पी.एच.डी की डिग्री मिली हुई थी लेकिन वे सच्चाई बयान करते थे, ''ज्यादा किताबें पढ़ने से शान्ति नहीं बल्कि बहस करने की आदत पड़ जाती है। दिल में अहंकार हो जाता है कि मैं ज्यादा पढ़ा–लिखा हूँ।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

वेद व्यापारी नानका लद न चलया कोए

आप वेद–शास्त्र के पढ़ने वालों को व्यापारी कहकर बयान करते हैं। वे जिन धर्मग्रन्थों का मान करते हैं, जब अन्त समय आएगा क्या वे इन धर्मग्रन्थों को अपने साथ ले जाएंगे या ग्रन्थ–पोथियाँ इन्हें छुड़वा देंगी? सन्त–महात्मा धर्मग्रन्थों की निन्दा नहीं करते बल्कि इनका ज्यादा से ज्यादा आदर करते हैं क्योंकि ये उन महात्माओं के लिखे हुए हैं जिनकी अंदर रसाई थी, जो मालिक से मिल चुके थे, इनके अंदर उन्होंने अपने तजुर्बे लिखे हैं कि उन्हें क्या–क्या रूकावटें पेश आई, उन्हें किस तरह दूर करना है और हमें क्या करना चाहिए? इनमें परमात्मा से मिलने के फायदे बताए हैं, गुरु के पास जाने के फायदे और नाम के फायदे बताए हैं। कबीर साहब कहते हैंः

वेद कतेब कहो मत झूठे, झूठा जो न विचारे।

मैं हमेशा कहा करता हूँः

पढ़या इल्म अमल न कीता, पढ़या फेर पढ़ाया की
आदत खोटी न गँवाई, मत्था फेर घिसाया की

कुछ प्रेमियों ने महाराज कृपाल से सवाल किया कि दुनिया के अंदर अमन किस तरह हो सकता है? महाराज कृपाल ने कहा, ''धर्मग्रन्थों में जो लिखा है इन पर अमल करने से दुनिया में शान्ति हो सकती है।''

गुरु नानकदेव जी ने गोपाल पंडित से कहा कि ब्रह्मा ने चार वेद रचे। शिव ने परमात्मा से मिलने के लिए माया का त्यागन किया। सिद्ध लोगों ने परमात्मा से मिलने की खातिर घर–बार छोड़ा, दुनिया के स्वाद छोड़े, हिमालय पर्वत पर जाकर तपस्या की लेकिन उन्होंने हवा में उड़ना शुरु कर दिया, रिद्धियाँ–सिद्धियाँ हासिल कर ली। इसी तरह देवताओं ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी। लोगों के दिल में ख्याल था कि देव–देही बहुत उत्तम है लेकिन ये लोग भी परमात्मा से मिलने में कामयाब नहीं हुए।

बाबा मनि साचा मुखि साचा कहीऐ तरीऐ साचा होई।।

गुरु नानकदेव जी ने गोपाल पंडित से कहा, ''अगर आपका मन सच्चा है तो आपकी जुबान पर भी सच ही आएगा, तभी आप उस सच्चे परमात्मा को पा सकेंगे। सच से ही आपका व्यवहार होगा अगर आपके मन में कुछ और जुबान पर कुछ और है तो आप परमात्मा से नहीं मिल सकते। आप दुनिया को मीठी, प्यार भरी कहानियाँ सुनाते हैं और उनसे कहते हैं कि विषय–विकार न कमाएं लेकिन खुद इनमें ग्रस्त हैं। लोगों से कहते हैं कि माया नागिनी है लेकिन खुद उस माया को पकड़ रहे हैं। लोगों से कहते हैं कि अभ्यास करना अच्छा होता है लेकिन आपने खुद जिंदगी में कभी अभ्यास नहीं किया, भजन पर नहीं बैठे।''

गुरु गोबिंद सिंह जी से कुछ रागियों ने इजाजत ली कि महाराज जी हमें राग करने दें, हम आपकी संगत को बहुत खुश करेंगे। प्रेमियों के पैसों से हमारे पेट की कुछ व्यवस्था हो जाएगी। वे राग में बहुत माहिर थे, कभी सुर ताल मिलने से उनकी आँखे बंद हो जाती थी। संगत उन पर बहुत मस्त थी। संगत ने कहा कि ये बहुत प्रेमी हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी ने हँसकर कहा, ''हाँ भई, कस्सी यहीं पर गायब है।'' प्रेमियों ने पूछा कि इसका क्या मतलब है? गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा कि रात को इन रागियों ने फलाने गाँव में चोरी की थी, ये अनिंद्रे हैं इसलिए इनकी आँखें बंद हो रही हैं।

गाँव में किसी आदमी की कस्सी खो गई थी, उसने सरपंच से कहा कि मेरी कस्सी खो गई है जिसके घर में है उससे दिलवा दें। सरपंच ने गाँव में होका दिया कि जिसके घर से कस्सी मिलेगी उसे जुर्माना लगेगा। कस्सी सरपंच के घर से ही मिली। सरपंच पंचायत में शर्मिन्दा हुआ। गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा, ''जिस तरह गाँव के सरपंच ने कस्सी को छिपा रखा था यही हालत इन रागियों की है। ये बाहर से आँखें बंद करके प्यार दिखा रहे हैं। पुलिस आने वाली है, पुलिस इन्हें पकड़कर ले जाएगी।''

दुसमनु दूखु न आवै नेड़ै हरि मति पावै कोई।।

हमारा सबसे बड़ा दुश्मन मन हमारे अंदर बैठा है। यह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पाँच डाकुओं को हमारे ऊपर हावी कर देता है। हम इनमें फँसकर दुख, परेशानियाँ इकट्ठी कर लेते हैं अगर हम मन–तन से सच्चे होकर सच्चे नाम की कमाई करें तो ये दुश्मन हमारे ऊपर हमला नहीं कर सकते, हमारे नजदीक नहीं आ सकते।

अगनि बिंब पवणै की बाणी तीनि नाम के दासा।।
ते तसकर जो नामु न लेवहि वासहि कोट पंचासा।।

सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण ये नामवाले के दास होते हैं। जो परमात्मा का नाम नहीं लेते वे चोर हैं, जुआरी हैं, उनके लिए यह सजा है कि उन्हें रहने के लिए ताँबे की धरती मिलती है, वहाँ खाने को कुछ नहीं मिलता और वे सर्प योनि में जाते हैं।

जे को एक करै चंगिआई मनि चिति बहुतु बफावै।।
एते गुण एतीआ चंगिआईआ देइ न पछोतावै।।

गुरु नानकदेव जी उस पंडित से कहते हैं, ''अगर कोई आदमी किसी का मामूली सा भी भला करता है तो वह दिन–रात उसके ऊपर हावी हो जाता है कि मैंने तेरी इतनी मदद की है, तू मेरा धन्यवाद नहीं करता।''

इंसान, परमात्मा का चोर है। यह नाम नहीं जपता, देने वाले का धन्यवाद नहीं करता। परमात्मा ने चौरासी लाख योनियों में से निकालकर इंसान का जामा दिया,तंदरूस्ती दी और अपने घर का भेद दिया। परमात्मा ने खुद इंसानी जामें में मलमूत्र का थैला धारण किया, दुनिया के ताने–मेहणे झेले। उसने कभी अहसान भी नहीं जताया और वह पछताया भी नहीं कि मैंने इस हृदय में नाम रख दिया, यह मुझे याद करता है या नहीं?

तुधु सालाहनि तिन धनु पलै नानक का धनु सोई।।
जे को जीउ कहै ओना कउ जम की तलब न होई।।

अब गुरु नानकदेव जी परमात्मा का धन्यवाद करते हुए कहते हैं, ''हे परमात्मा जो तेरे नाम की कमाई करते हैं, तू उन्हें नाम का धन बख्श देता है। मेरे पास भी वही धन है जो तू मालिक के प्यारों को देता है। नाम लेना तो बहुत बड़ी चीज है अगर कोई मालिक के प्यारों को आदर से 'जी' भी कह दे तो यम उसे तलब नहीं करते, उसके लिए भी इतनी माफी है।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर घर में एक के पास नाम है, परिवार के दूसरे लोग सुनकर भी भरोसा ले आते हैं। चाहे उन्हें नाम नहीं मिला होता, उन्होंने दर्शन भी नहीं किए होते, उनकी भी संभाल हो जाती है।'' हमारा जातिय तजुर्बा है, बहुत से प्रेमियों के पत्र आ जाते हैं जिन्हें नाम नहीं मिला होता, वे बताते हैं कि हमारे मित्र या माता–पिता ने अस्पताल में शरीर छोड़ा, उनकी संभाल हुई क्योंकि उनका अंदर से गुरु के साथ प्यार बना हुआ था।

मैंने कई बार हरनाम सिंह की कहानी सुनाई है। यह कहानी सन्तबानी मैगजीन में छपी है और प्रेमियों ने पढ़ी भी है। महाराज कृपाल अबोहर में कार से जा रहे थे हरनाम सिंह ने, महाराज जी के दर्शन किए, उसे नाम भी नहीं मिला था। हरनाम सिंह ने एक साल बाद शरीर छोड़ा, उसकी संभाल हुई। उसने कई आदमियों के सामने इकबाल किया कि वह हस्ती जिसके मैंने अबोहर में दर्शन किए थे, वह मुझे संभालने के लिए आ गई है।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

11 जनवरी 1983
मुम्बई

दर्शनों की महानता

एक प्रेमी: *– जब हम घर वापिस पहुँच जाते हैं तो हमें गुरु के दर्शनों की बहुत याद आती है, क्या हम वीडियो के जरिए सतगुरु के दर्शन प्राप्त कर सकते हैं?*

बाबा जी: – मेरा आपको रोज भजन–सिमरन करवाने का मकसद इस समस्या को हल करवाना ही है। असली चीज अंदर है, बाहर उसकी नकल है। अगर आप नित्य नियम से भजन–सिमरन करते हैं, अंदर जाते हैं और गुरु के दर्शन करते हैं तो आपको कोई समस्या नहीं होगी और आपको बाहरी दर्शनों की कमी भी महसूस नहीं होगी।

वीडियो के जरिए आप गुरु को याद कर सकते हैं लेकिन वीडियो आपको सतगुरु के असली दर्शन नहीं करवा सकती। क्यों न हम गुरु के

प्यार और विश्वास में भजन–सिमरन करें? जब तक गुरु देह रूप में मौजूद हैं तो क्यों न उस मकसद को पूरा किया जाए जिसके लिए गुरु इंसानी जामें में आए हैं? क्यों न हम अंदर जाकर गुरु के अंदरूनी दर्शन प्राप्त करें ताकि हम जब चाहें अंदर जाकर गुरु के दर्शन कर सकें।

हमें भूलकर भी ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि गुरु हिन्दुस्तान में रहते हैं और हम उनसे दूर रह रहे हैं। हमें ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि गुरु इंसानी शरीर में हैं, गुरु 'शब्द रूप' हैं। वे संसार में हमें समझाने के लिए आए हैं। वे जब हमें नामदान देते हैं उस समय हमारी आँखों के पीछे तीसरे तिल पर अपनी सीट बना लेते हैं और हमेशा वहाँ हमारा इंतजार करते हैं।

अब समय बदल गया है और मैं वीडियो बनाने वालों के काम की सराहना करता हूँ कि वे गुरु की याद ताजा करने में आपकी मदद करते हैं लेकिन हमें कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि हम वीडियो द्वारा गुरु के दर्शन प्राप्त कर सकते हैं या अपनी समस्या का हल पा सकते हैं। अगर हम इस समस्या को हल करना चाहते हैं तो हमें अंदर जाना होगा, गुरु को अपने अंदर प्रकट करना होगा।

एक प्रेमी: *– सतगुरु कहते हैं कि जब तक हम सिमरन का कोर्स पूरा न कर लें तब तक 'शब्द धुन' हमारी आत्मा को ऊपर नहीं खींचती। आप हमें बताएं कि सिमरन का कोर्स पूरा किए बिना भजन–अभ्यास करने के क्या फायदे हैं?*

बाबा जी: **–** सिमरन करने का यह फायदा है कि सिमरन हमें 'शब्द–धुन' सुनने की रूचि बनाए रखने में मदद करता है। आखिर हमारी आत्मा ने शब्द–धुन के जरिए चढ़ाई करके वापिस अपने असली घर जाना है। इससे पहले कि 'शब्द' हमारी आत्मा को ऊपर खींचे, हमें 'शब्द–धुन' सुनने की आदत बना लेनी चाहिए।

कई बार शब्द–धुन इतनी सुरीली होती है कि मन उसके नशे में मस्त हो जाता है इसलिए 'शब्द–धुन' सुनना बहुत जरुरी है ताकि हमारे मन को शान्ति मिले, मन हमारे काबू में आ जाए और हम हमेशा 'शब्द–धुन' के नशे में मस्त रहें।

एक प्रेमी: *– मेरा सवाल बच्चों के बारे में है, बच्चों में बहुत इच्छा शक्ति होती है और कई बार बच्चे बहुत जिद्दी हो जाते हैं। मैं नहीं जानता कि बच्चों से कैसे निबटा जाए?*

बाबा जी: **–** बच्चे भोली आत्माएं होती हैं। माता–पिता को बच्चों के साथ बहुत धैर्य से काम लेना चाहिए।

एक बार ऐसा ही सवाल अकबर बादशाह ने अपने प्यारे मंत्री बीरबल से पूछा, ''मुझे बताओ कि बच्चे का पालन–पोषण करना कितना आसान है?'' बीरबल ने जवाब दिया, ''महाराज, बच्चे का पालन–पोषण करना सबसे मुश्किल काम है। बच्चे भोले होते हैं वे नहीं जानते कि क्या सही है और क्या गलत है? उन्हें दुनिया की समझ नहीं होती। उन्हें किसी काम के लिए मनाना बहुत मुश्किल होता है।'' अकबर ने जवाब दिया, ''मैं नहीं मानता, मैं तुमसे सहमत नहीं हूँ। बेशक बच्चे कुछ नहीं जानते लेकिन वे जो भी माँगे अगर आप उन्हें वह दे दें तो बच्चे वही करेंगे जो आप उनसे करवाना चाहते हैं, आपको हमेशा उनकी इच्छा पूरी करनी चाहिए।''

बीरबल ने कहा, ''आप हमेशा बच्चों की इच्छाएं पूरी नहीं कर सकते क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या माँग रहे हैं।'' अकबर ने कहा, ''मैं आपसे सहमत नहीं हूँ। आप यह साबित करें कि यह दुनिया का सबसे मुश्किल काम है।'' बीरबल ने कहा, ''ठीक है, मैं आपका बच्चा बन जाता हूँ और आप मेरे पिता बन जाएं फिर देखते हैं कि आपके लिए मेरी देखभाल करना, मेरी इच्छाएं पूरी करना कितना आसान है।''

बीरबल ने अकबर का बेटा होने का नाटक किया और चीजें माँगनी शुरु की। पहले उसने कहा, ''पिता जी, मुझे एक हाथी चाहिए।'' अकबर सम्राट था उसके लिए हाथी लाना कोई मुश्किल बात नहीं थी तो हाथी लाया गया। फिर बीरबल ने कहा, ''मुझे एक छोटा ग्लास चाहिए।'' फिर बीरबल ने कहा, ''पिता जी, मैं हाथी को इस ग्लास में डालना चाहता हूँ।''

अब सम्राट अकबर ने कहा, ''ऐसा कैसे मुमकिन है? ग्लास बहुत छोटा है और हाथी बहुत बड़ा है।'' अकबर ने बीरबल को समझाने की बहुत कोशिश की कि ऐसा नहीं हो सकता। बीरबल ने कहा, ''मैं ऐसा करना चाहता हूँ, नहीं तो मैं रोऊंगा।'' सम्राट अकबर ने उसे कई तरीकों से समझाने की कोशिश की कि ऐसा नहीं हो सकता लेकिन बीरबल नहीं माना और रोने लगा।

आखिर सम्राट अकबर ने कहा, ''अब मैं मानता हूँ कि यह बहुत मुश्किल काम है।'' बीरबल ने जवाब दिया, ''माता–पिता को बहुत धैर्य से काम लेना चाहिए। अगर माता–पिता बच्चों को धैर्य से समझाने की कोशिश करते रहेंगे और उन्हें अच्छे तरीके से बड़ा करने की कोशिश करेंगे तो वे अपने बच्चों की देखभाल करने में सफल हो जाएंगे।''

मैं तो यही कहूँगा कि बच्चों की देखभाल का काम दुनिया में सबसे मुश्किल है लेकिन इस समस्या का समाधान सिर्फ धैर्य है। मैं मानता हूँ कि बच्चे जिद्दी होते हैं और उनमें बहुत इच्छा शक्ति होती है अगर आपमें धैर्य है तो आप उनका दिल जीत सकते हैं फिर आप जो चाहेंगे वे वही करेंगे।

बच्चे भोली आत्माएं होते हैं। कई बार बच्चे ऐसे प्रश्न पूछ लेते हैं जिनका जवाब देने में संकोच होता है। माता–पिता उनके सवाल का जवाब जानते हुए भी कह नहीं पाते। बचपन में एक बार मैंने अपनी माता से पूछा, ''मैं कैसे पैदा हुआ?'' मेरी माता मेरे इस सवाल का जवाब दे सकती थी लेकिन उसने कहा, ''मैंने तुम्हें एक भिखारन से लिया है, मैंने उसे थोड़ा

सा आटा दिया और उस भिखारन ने तुम्हें मुझे दे दिया।'' मेरे बड़ा होने पर भी वे मेरी इस बात का मजाक बनाते रहे। जब कोई भिखारन आती तो मेरी माता कहती, ''अपनी माता को देखो, इसने तुम्हें मुझे दे दिया और अब ये वापिस आ गई है।''

गुरु नानक साहब एक भोला बच्चा बनकर परमात्मा से कहते हैं, ''हे परमात्मा, मैं आपका बच्चा हूँ आप मेरे गुनाह माफ कर दें। मैंने जो भी गुनाह किए हैं भोलेपन में किए हैं। मुझे पता नहीं कि मैं क्या करूं? आप मेरे पिता हैं, परमात्मा हैं, आप मेरे गुनाह माफ कर दें।'' माता अपने बच्चे की गलतियाँ याद नहीं रखती अगर वह याद रखे तो बच्चे की देखभाल नहीं कर सकती, बच्चे का पालन–पोषण नहीं कर सकती।

दुनियावी लोगों को अपने बच्चों से बहुत आशाएं होती हैं लेकिन सतगुरु को अपने बच्चों से कोई आशा नहीं होती। उनमें अपने बच्चों के लिए बहुत प्रेम और धैर्य होता है। उनका बच्चों की देखभाल करने में कोई स्वार्थ नहीं होता, उनका काम सिर्फ आत्मा को वापिस सच्चखंड ले जाना होता है। वे बच्चों की गलतियों और गुनाहों की तरफ ध्यान न देते हुए उस समय का इंतजार करते हैं कि बच्चा अपनी हालत सुधार ले। उनमें बहुत धैर्य होता है और अंत में वे आत्मा को वापिस ले जाते हैं।

सतगुरु डोर ढीली तो कर देते हैं लेकिन हाथ से नहीं छोड़ते और हमारा इंतजार करते हैं, वे हमेशा हमें माफ करते हैं। जिस तरह सतगुरु धैर्य से काम लेते हैं उसी तरह हमें धैर्य से काम लेना चाहिए। अगर हमारा बच्चा कोई गलती करे तो हमें उसे माफ कर देना चाहिए क्योंकि बच्चे भोले होते हैं। हमें धैर्य से बच्चों का पालन–पोषण करना चाहिए।

एक प्रेमी: *– जब हम डायरी में अपनी गलतियाँ कबूल करते हैं तो क्या ऐसा करने से उन गलतियों के कर्मों का बोझ कम हो जाता है?*

बाबा जीः – हाँ, अपनी गलतियाँ मानने से हम उस कर्म के बोझ से जरूर मुक्त हो जाते हैं लेकिन वह गलती दोबारा न की जाए। इस दुनिया में भी अगर हम पहली बार गलती करके माफी माँगते हैं तो दुनियावी इंसान भी हमें माफ कर देता है। परमात्मा की अदालत में बहुत माफी है अगर हम पहली बार गलती करके गुरु से माफी माँगेगे तो वे हमें जरूर माफ करेंगे।

डायरी के बारे में मैंने कई बार खोलकर बताया है कि आप डायरी को रीति–रिवाज न बनाएं। एक बार गलती का अहसास होने पर आपको उसे कभी दोहराना नहीं चाहिए।

एक प्रेमीः – *जब हम गुरु से अपने किए हुए पापों की माफी माँगते हैं तो क्या गुरु उस कर्म का बोझ अपने शरीर पर लेते हैं?*

बाबा जीः – मैंने कई बार महाराज सावन सिंह जी के ये शब्द दोहराए हैं। वे कहा करते थे, ''काल एक भी कर्म माफ नहीं करता। हमने जो कर्म काल के राज्य में किए हैं, उनका भुगतान गुरु या शिष्य किसी एक को करना होगा।'' अगर शिष्य के पैर में मामूली सा काँटा भी चुभ जाए तो वह उस दर्द से मुक्ति पाने के लिए गुरु के आगे प्रार्थनाएं करता है। वह इतना दर्द भी सहन नहीं कर पाता और हमेशा गुरु से मदद माँगता है।

गुरु हर किस्म की बीमारी से मुक्त होते हैं। वे संसार में आत्माओं को मुक्ति दिलवाने और उनके कर्म काटने के लिए आते हैं। फिर भी वे बीमार क्यों होते हैं? ऐसा शिष्यों के कर्मों या पापों की वजह से होता है। कई बार गुरु अपने शिष्यों के कर्मों की वजह से बहुत जल्दी चोला छोड़ जाते हैं।

सदा याद रखें, हम इस दुनिया में जो भी कर्म करेंगे उनका भुगतान करना पड़ेगा, वह भुगतान शिष्य करे या गुरु करे। तुलसी साहब भी यही कहते हैं कि कर्मों के कानून को बदला नहीं जा सकता। यह संसार कर्मों के कानून के हिसाब से चलता है, हम जो बोएंगे वही काटेंगे।

एक प्रेमी: *– महाराज जी, पिछली सन्तबानी मैगजीन में एक बंदर, बकरी और औरत का उदाहरण दिया गया है कि बकरी ने नहीं बल्कि बंदर ने खाना खाया और बकरी के मुँह पर खाना लगा दिया। उस औरत ने बाहर से वापिस आकर बकरी को पीटा वह औरत कौन थी?*

बाबा जी: – हम लोग समझने की कोशिश नहीं करते कि कहानी में क्या कहा गया है, हम बाल की खाल निकालते हैं। सन्त–महात्मा प्यार से हमें कहानियों और उदाहरणों के जरिए समझाने की कोशिश करते हैं लेकिन हम समझने की बजाय बेकार की चीजों पर लड़ने–झगड़ने लग जाते हैं जिसका कोई मतलब नहीं।

मैंने कई बार कहा है कि आपके द्वारा पूछे गए ज्यादातर प्रश्न सन्तबानी मैगजीन में छप चुके हैं या उनका जवाब सतसंगों में दिया जा चुका है। आप जब भी सतसंग सुनें या सन्तबानी मैगजीन पढ़ें तो उसे बहुत ध्यान से पढ़ें। आपके प्रश्नों का जवाब मैगजीन में दिया जा चुका है।

एक प्रेमी: *– सतगुरु कहते हैं कि अपने बच्चों में भक्ति की भावना जगाना बहुत अच्छा काम है। आप हमें कोई उदाहरण दें?*

बाबा जी: – कल मैंने बच्चों के प्रोग्राम में शेख फरीद और उसकी माता की कहानी सुनाई थी, आप भी वैसा ही बनने की कोशिश करें। आप उसे उदाहरण की तरह लें।

एक प्रेमी: – जब बच्चे पैदा होते हैं तो क्या उन्हें 'शब्द–धुन' सुनाई देती है? क्या बाद में दुनिया की आवाजें 'शब्द–धुन' के रास्ते में रूकावट बन जाती हैं?

बाबा जी: – माता की कोख में आत्मा 'शब्द' के सहारे सुरक्षित होती है और उसका पालन–पोषण हो रहा होता है। आत्मा शब्द के साथ जुड़ी होती है। शब्द, प्रकाश और धुन के रूप में होता है। जब बच्चा पैदा होता है, वह बाहरी प्रकाश देखता है और बाहरी आवाजें सुनता है। जब

बच्चा पैदा होता है उस समय वह बहुत रोता है ऐसा इसलिए होता है कि बच्चा अंदरूनी प्रकाश और धुन से अलग हो जाता है। माता की कोख में बच्चा शब्द के सहारे सुरक्षित है, उस समय बच्चा रोता है और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है, ''हे परमात्मा, आप मुझे इस जेल से बाहर निकालें, मैं दिन–रात आपकी भक्ति करूँगा।''

बाहर आने के बाद आत्मा रोती है। पहले के समय में और आज भी जब बच्चा रोता है तो हम लोग उसे लाइट दिखाते हैं, बच्चा लाइट देखकर चुप हो जाता है। कई बार हम लोग बच्चे के आगे किसी थाली वगैरहा की आवाज करते हैं ताकि बच्चे का ध्यान 'शब्द–धुन' की तरफ चला जाए फिर बच्चा रोना बंद कर देता है। इसका मतलब यह है कि माता की कोख में आत्मा के पास धुन और प्रकाश दोनों ही थे।

एक प्रेमी: *– जब हम दुनियावी काम को सेवा की तरह देखते हैं जैसे समाज को बेहतर बनाने के लिए हम कुछ करना चाहते हैं तो क्या वह सेवा है? या गुरु का काम करना ही सेवा होती है?*

बाबा जी: – जो काम हम समाज में रहते हुए करते हैं वे काम अच्छे कर्मों में गिने जाते हैं और उससे हमें फायदा होता है। हमारा जन्म एक समाज में हुआ है और समाज का काम करना हमारा फर्ज है। जहाँ तक सेवा का सम्बंध है, असली सेवा भजन–सिमरन करना ही है। हम अपनी आत्मा को ऊपर उठाने के लिए अभ्यास करते हैं जिससे हमें मुक्ति मिलेगी। हमें कम से कम समय समाज को देना चाहिए और ज्यादा से ज्यादा समय भजन–अभ्यास को देना चाहिए। बहुत से लोग समाज की सेवा कर सकते हैं लेकिन कुछ गिने–चुने लोगों को ही 'शब्द–नाम' के अभ्यास का मौका मिला है।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से...

मेरा फौजी जीवन

मैंने बचपन में ही अपने परिवार के लोगों को बता दिया था कि मैं अपना गुजारा स्वयं करूंगा। उस समय दूसरा विश्वयुद्ध चल रहा था, हिटलर आगे बढ़ रहा था। फौज में भर्ती चल रही थी, सरकार जबरदस्ती फौज में भर्ती कर रही थी। उस समय लोग बीस साल की कैद मंजूर कर लेते थे लेकिन फौज में नहीं जाना चाहते थे।

उस समय मेरी उम्र बहुत कम थी, मैं खुशी से फौज में भर्ती हुआ। भर्ती करने वाला अफसर मुझे देखकर खुश हुआ, उसने मेरी पीठ ठोककर मुझे शाबाशी दी। उन दिनों मुझे एक साधु मिला, उस साधु ने कहा, ''जो सैनिक लड़ाई में मारा जाता है वह सीधा स्वर्ग में जाता है।'' मैंने लड़ाई के मोर्चे पर जाने के लिए अपना नाम लिखवा दिया।

लड़ाई में जाने से पहले डॉक्टरी जाँच होती थी, डॉक्टर कमजोर जवानों को दूध दिए जाने की सिफारिश करता था। तब हमारे कमांडर ने कहा, ''ये सब बलि के बकरे हैं, सभी को आखिरी दिनों में दूध पीने के लिए दिया जाए।''

फौज में बहुत आजाद किस्म के लोग होते हैं। मैं वहाँ पर दूसरे लोगों से अलग रहता और '*हे राम, हे गोविंद*' का जाप करता रहता। धीरे–धीरे

मेरे साथियों को यह बात मालूम हो गई, वे सभी मुझे बहुत श्रद्धा से देखने लगे, मेरा आदर करने लगे। शुरु में फौजी ट्रेनिंग की कसरत बहुत सख्त होती है, फौजियों को रोज परेड करनी पड़ती है।

हमारा एक पंजाबी अफसर बहुत सख्त था, वह परेड करती हुई पलटन पर बहुत कड़ी नजर रखता था। परेड के समय फौजियों को 'लेफ्ट–राइट' बोलना पड़ता था लेकिन मेरी जुबान पर *'हे राम, हे गोविंद'* का सिमरन पक चुका था, मेरी जुबान से *'हे राम, हे गाविंद'* ही निकल रहा था।

यह जाप सुनकर हमारा अफसर मुझ पर बहुत क्रोधित हुआ और उसने मुझे अकेले परेड करने के लिए कहा। उसी समय वहाँ एक बड़ा अंग्रेज अफसर आ गया। उस अफसर ने हमारे पंजाबी अफसर से पूछा कि यह जवान क्या बोल रहा है? पंजाबी अफसर ने बताया, ''सर, यह जवान साधु प्रवृति का है, सदा भगवान का नाम ही जपता रहता है।'' यह सुनकर वह अंग्रेज अफसर बहुत खुश हुआ और उसने कहा, ''यह जवान युवक उम्र में मुझसे छोटा है लेकिन मुझे अपने पिता की तरह महसूस हो रहा है।'' उस अफसर ने मेरी तरफ बहुत श्रद्धा से देखा और मेरी परेड माफ कर दी फिर मुझे जाप करने के लिए ज्यादा समय मिलने लगा।

मैं सिक्ख परिवार में पैदा हुआ था और सिक्ख समाज के नियमों का सख्ती से पालन करता था। मुझे शुरु से ही गुरुद्वारों और गुरुग्रंथ साहब पर श्रद्धा थी। मैंने एक मिस्त्री से टीन का छोटा सा गुरुद्वारा बनवाया और उसके अंदर गुटका रखा जिसे मैं सदा अपनी पीठ के पीछे बाँधे रखता था और दिन में दो बार धूप भी जलाया करता था। फौजी जीवन में यह सब निभाना बहुत मुश्किल है लेकिन मैंने यह सब बहुत प्यार से किया।

मैं जब बाबा बिशनदास जी के चरणों में पहुँचा तो उन्होंने कहा, ''अरे भले आदमी, सच्चा गुरुद्वारा तो तेरा शरीर है।'' उन्होंने गुरु ग्रंथ साहब का यह शब्द मेरे सामने रखाः ***हरि मंदर ऐह शरीर है, ज्ञान रतन प्रगट होए***

यह शब्द पढ़कर मैंने अपनी गर्दन नीचे झुका ली। बाबा बिशनदास जी ने कहा, नीचे क्या देखता है? इस मंदिर में जाना है, इसकी इज्जत करनी है।

आप जानते हैं कि फौज में कई किस्म के लोग होते हैं। धार्मिक आदमियों को कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। वहाँ के लोग मुझे सिनेमा देखने के लिए प्रेरित करते लेकिन मैं उनकी इस बात को स्वीकार नहीं करता था। कई बार मैं सिनेमा देखने की बजाय उनकी ड्यूटी ले लिया करता था लेकिन सिनेमा देखने नहीं जाता था। वे लोग सिनेमा की प्रशंसा करते लेकिन उसके दुर्गुण नहीं जानते थे।

शराब पीने वाले शराब की बड़ाई करते लेकिन यह नहीं कहते कि शराब बुरी चीज है। इसी तरह माँस खाने वाले माँस के फायदे बताकर माँस खाने के लिए प्रेरित करते कि माँस खाने से शक्ति बढ़ती है। मैं उनसे कहता, ''अगर आप शक्तिशाली हैं तो मेरे साथ दौड़ लगाएं।'' कई बार मैं उन लोगों से विनती करता, ''भाईयो, आप शोर न करें, मैं अभ्यास कर रहा हूँ।'' वे लोग शोर मचाकर मुझे तंग करने की कोशिश करते लेकिन मैं उनकी तरफ ध्यान नहीं देता था। मैं अपने आप में मस्त रहता था अगर हम सच्चे दिल से भक्ति करते हैं तो परमात्मा अवश्य हमारी मदद करता है।

मेरी स्कूली पढ़ाई कम थी, मैं मेहनत और लगन से तरक्की करता हुआ एक सिपाही से वायरलेस ऑपरेटर के पद पर पहुँचा। मुझे कई इम्तिहान देने पड़े, मैं सदा ही अपने इम्तिहानों में फर्स्ट आया करता था। मैं अपने उस्तादों की बहुत इज्जत करता था और मेरे उस्ताद भी मेरी इज्जत करते थे। मैं फर्स्ट पटियाला रेजिमेंट में था, मैंने दौड़ के कई मुकाबले जीते। मेरे दिल में कभी यह ख्याल नहीं आया कि कोई मुझसे आगे निकल जाएगा। मैं ऊँची छलाँग लगाया करता था, एक दौड़ाक के तौर पर मुझे ईग्लैंड जाने का भी मौका मिला।

एक बार हमारी रेजिमेंट सीमाप्रान्त नौशहरा छावनी में थी, वहाँ दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। उस समय मेरा कद छोटा और शरीर बहुत पतला था। वहाँ पठानों की बटालियन ने सुन रखा था कि फर्स्ट पटियाला रेजिमेंट में एक सिक्ख सिग्नेलर है जो बहुत तेज दौड़ाक है, आज उसे देखने का मौका मिलेगा। उनमें एक पठान भी था जो दौड़ में भाग लिया करता था, वह पठान बड़ा मजबूत था, उसने बहुत माल खाया हुआ था।

जब दौड़ लगाने वालों की कतारे लगी तो वह पठान मेरे पास ही खड़ा हुआ था, उसने मुझसे पूछा, ''तुम्हारा नाम अजायब सिंह है?'' मैंने कहा, ''हाँ।'' उस पठान ने कहा, ''क्या खाते हो दाल–रोटी, अन्न के साथ अन्न खाते हो?'' उसने और भी कई मजाक किए लेकिन मैं चुप रहा। फिर वह कहने लगा, ''मेरा दिल करता है कि मैं तुझे बगल में दबाकर दौड़ लगाऊँ।'' तब मैंने कहा, ''कोई बात नहीं यह तो वक्त ही बताएगा।'' दौड़ शुरु हुई, हमारी पलटन का साहब भी साथ–साथ चल रहा था जब दौड़ का आखिरी चक्कर आया तो मैंने उस पठान को पीछे छोड़ दिया और मैं दौड़ में फर्स्ट आया, वह पठान सबसे पीछे रह गया।

एक साहब ने मुझसे कहा कि शराब पीने से हौंसला बढ़ता है। तब मैंने उस साहब से कहा, ''आपके हौंसले का पता तब चलेगा जब आप लड़ाई में मुझसे आगे निकल जाएंगे, हौंसला तो अंदर ही होता है। जो नशा नहीं करता उसका दिमाग ठीक और दिल मजबूत रहता है।''

हमारी पलटन में एक सरबण नाम का लांगरी (खाना बनाने वाला) हुआ करता था। पलटन के लोग उसकी शिकायत करते कि आज इसने जली हुई रोटियाँ और ज्यादा नमक वाली दाल बनाई है। सरबण उन लोगों से बहुत दुःखी था। मैं चुपचाप लंगर में जाता जैसा खाना मिलता खाकर चला आता। सरबण ने जानबूझकर एक–दो बार मुझे भी खराब दाल और जली हुई रोटियाँ दी लेकिन मैंने चुपचाप भोजन कर लिया।

एक दिन सरबण ने मुझसे कहा, ''सन्त जी, आपने साहब से मेरी शिकायत तो नहीं की?'' मैंने उसे बहुत प्यार से कहा, ''भाई, जो लोग तुम्हारी शिकायत करते हैं क्या तुम उन्हें अच्छा समझते हो? मैं किसी की शिकायत नहीं करता, सभी लोग अच्छे हैं।''

सरबण ने कहा, ''सन्त जी, मेरा मन चाहता है कि मैं आपकी सेवा करूँ। आपको लंगर में आने की जरूरत नहीं। आपका फुल्का, चाय आपकी चारपाई पर ही पहुँच जाया करेगा।'' वह रोजाना सुबह चाय लेकर मेरे पास आ जाता। सरबण का फौज में 3212 नम्बर था, मैं उसे 3212 कहकर ही बुलाता था।

सरबण एक दिन सुबह चाय लेकर आया तो मैंने उसे प्यार से कहा, ''भाई, 3212 तुम मेरी बहुत सेवा करते हो, तुम्हारी शादी हो जाए, तुम्हें ऐसी पत्नी मिले जो तुमसे चाय बनवाया करे।'' सरबण का रंग काला था और वह खूबसूरत भी नहीं था। उसने कहा, ''सन्त जी, कोई अपनी बेटी से तो मेरी शादी नहीं करेगा अगर कोई भागी हुई औरत पीछे से ही लड़की साथ लाई हो तो भले ही उससे मेरी शादी हो जाए।'' इस तरह हम दोनों में दिल्लगी चलती रहती।

मैंने फौज की नौकरी छोड़ दी और सरबण भी नौकरी छोड़कर अपने गाँव चला गया। सरबण की अच्छी जमीन–जायदाद थी, उसकी शादी भी हो गई। सरबण के गाँव के एक मिस्त्री के साथ मेरी जान पहचान थी, वह मिस्त्री मुझसे मजाक में कहता, ''आप शराब के खिलाफ हैं। भला फौज में भी कोई शराब के बिना रह सकता है, मैं इस बात को नहीं मानता।'' आखिर बातों–बातों में सरबण का जिक्र आया तो उस मिस्त्री ने कहा कि सरबण मेरे गाँव में रहता है। मिस्त्री ने सोचा जब सरबण आएगा तो सन्त जी की पोल खुल जाएगी। मिस्त्री ने सरबण को बुलाने के लिए अपने लड़के को गाँव भेजा।

सरबण की शादी ऐसी औरत से हुई जो उससे चाय बनवाया करती थी। सरबण कभी–कभी अपनी पत्नी से कहता, ''मैंने फौज में एक सन्त की सेवा करके तुम्हें पाया है। वह सन्त कहा करते थे कि तुम्हें ऐसी पत्नी मिले जो तुमसे चाय बनवाया करे।''

जब सरबण के पास मिस्त्री का लड़का पहुँचा तो सरबण मुझसे मिलने आया। उसके दिल में मेरे लिए बहुत इज्जत थी, उसने दूर से ही अपने जूते उतार दिए और मेरे पैरों में आकर गिर पड़ा। मैंने उसे अपने गले से लगाया, मिस्त्री हैरान होकर देखता रहा। सरबण मुझे अपने घर लेकर गया। उसकी पत्नी ने श्रद्धा से मुझे नमस्कार किया और चाय बनाकर लाई। मैंने उसकी पत्नी से पूछा, ''सुनाओ भाई, तुम्हारी गृहस्थी का क्या हाल है?'' उसकी पत्नी ने कहा कि चाय तो रोज यही बनाता है, मैं कभी–कभी इससे रोटी भी बनवा लेती हूँ।

हमारी रेजिमेंट में एक बार पहरेदारों की मिलीभगत से बंदूको की चोरी हुई। हमारी पलटन का कमांडर परेशान था क्योंकि कुछ निर्दोष लोगों को सजा मिलने जा रही थी। उस समय कमांडर ने एक युक्ति सोची। फौज में सभी लोग मुझे सन्त जी कहते थे और सम्मान की दृष्टि से देखते थे। कमांडर ने मुझे अपने पास बिठा लिया और लगभग पन्द्रह सौ जवानों से कहा, ''अपनी सच्चाई का प्रमाण देने के लिए सन्त जी को हाथ लगाकर कहें कि मैंने चोरी नहीं की।'' हर जवान ने मेरे शरीर को स्पर्श करके कसम खाई लेकिन उनमें से चार जवान मेरे सामने आते ही काँपने लगे। उनकी मेरे शरीर को स्पर्श करने की हिम्मत नहीं हुई। इस तरह कमांडर ने युक्ति से चोरी का पता लगा लिया।

एक बार हमारी रेजिमेंट में इंग्लैंड से एक रिटायर्ड मेजर जादूगर आया। उसने जादू के कई करतब दिखाए, लोग उससे बहुत प्रभावित हुए। उसने एक हाथ में चिड़िया को पकड़कर दूसरे आदमी से चिड़िया का सिर काटने

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

के लिए कहा। लोगों ने देखा कि चिड़िया मर गई और धरती पर खून गिर रहा है। कुछ देर बाद उसने चिड़िया के दोनों भागों को जोड़कर उसे उड़ा दिया। फिर उसने लकड़ी का बुरादा मँगवाकर उस बुरादे को चीनी में बदल दिया और उस चीनी की चाय बनाकर अफसरों को पीने के लिए दी गई। अफसरों ने जब चाय की चुस्की ली तो उनसे पूछा, ''क्या चाय मीठी है?'' तब उन अफसरों ने कहा, ''हाँ, यह चाय मीठी है।'' जब उन्होंने दोबारा चुस्की ली तो वह लकड़ी का बुरादा था। उस जादूगर ने कहा, ''मैं यह खेल बाँसुरी से करता हूँ, मेरी सारी शक्ति इस बाँसुरी में है।''

मैंने उस जादूगर को तंग करने की बात सोची। मैंने अपने मन की एकाग्रता से उसकी बाँसुरी को बाँध दिया। जब जादूगर ने बाँसुरी बजानी चाही तो बाँसुरी नहीं बजी। वह बहुत परेशान हुआ, उसने हमारे कंमाडर से कहा कि आपकी फौज में कोई ऐसा आदमी है जो शक्ति रखता है, उसने मेरी बाँसुरी को बाँध दिया है। मैं उस आदमी से प्रार्थना करता हूँ कि वह अपनी शक्ति हटा ले नहीं तो मैं आगे का खेल नहीं दिखा सकूँगा। उसकी प्रार्थना सुनकर मैंने अपनी शक्ति को हटा लिया।

जादूगर ने कहा, ''आपको यह नहीं समझना चाहिए कि यह सच्चा जादू है। आपको यह भी नहीं समझना चाहिए कि मैं मुर्दे में जान डाल सकता हूँ अगर मैं ऐसा कर सकता तो इंग्लैंड के राजा–रानी मुझे अपनी सेवा में रख लेते और यहाँ नहीं आने देते। मैं यह सब लोगों को प्रभावित करने के लिए अपने मन की एकाग्रता से करता हूँ।''

एक बार हमारी रेजिमेंट लाहौर में थी, तब जवानों के मनोरंजन के लिए नाचने–गाने वाली एक मंडली आई। उनमें एक आदमी, औरत के कपड़े पहनकर नाच रहा था। मैंने भोलेपन में अपने साथियों से कहा, ''यह औरत कितनी बहादुर है कि यह आदमियों के साथ नाच रही है।'' मेरे साथियों ने कहा कि यह आदमी है इसने औरतों वाले कपड़े पहन रखे हैं।

मैंने सोचा यह आदमी थोड़े से पैसों के लिए औरत बनकर नाच रहा है, इसने चंद पैसों के लिए अपने आपको कुर्बान कर रखा है। मेरे दिल में ख्याल आया कि मैं युगों–युगों से परमात्मा से बिछुड़ा हुआ हूँ इसी तरह मुझे भी परमात्मा को पाने के लिए अपने आपको कुर्बान करना होगा। मैंने इस बात से गहरा सबक लिया। जवानों ने उस नाचने वाले आदमी को एक–एक रूपया दिया लेकिन मैंने उसे दस रूपये दिए।

मोर्चे पर जाने से पहले मैं बाबा बिशनदास जी से मिलने गया। मुझे उस साधु ने जो कुछ कहा था मैंने वह सब बाबा बिशनदास जी को बताया। बाबा बिशनदास जी ने कहा, ''स्वर्गों में क्या है? स्वर्गों में भी मौत–पैदाइश, लड़ाई–झगड़ा और प्यार–नफरत है। एक देवता दूसरे देवता को देखकर जलता है, वहाँ भी भोग हैं। तुमने स्वर्गों में नहीं जाना, तुम्हारा रास्ता ऊपर है। लड़ाई में कर्त्तव्य पालन के लिए ही जाएं।''

फौज के दौरान मेरी ड्यूटी पटियाला रियासत में थी, वहाँ का राजा बीमार था। महल के चारों तरफ फौज का सख्त पहरा था। राजा की मौत हो गई किसी को पता ही नहीं चला कि मौत का फरिश्ता आया कहाँ से और कान पकड़कर ले कहाँ गया? मेरे अंदर मौत का रहस्य और भी गहरा हो गया लेकिन इसका हल तभी समझ आया जब मैं महाराज कृपाल के चरणों में पहुँचा।

हमारी पलटन का जनरल विक्रम सिंह बहुत ही धार्मिक व्यक्ति था, वह साधु–सन्तों से मिलकर बहुत खुश होता था। उसका मेरे साथ बहुत प्यार था। एक बार हमारी पलटन ब्यास गई, तब वह महाराज सावन के दर्शनों के लिए गया। महाराज सावन सिंह जी उसे अपने बराबर कुर्सी पर बिठाना चाहते थे लेकिन वह नीचे धरती पर ही बैठा।

सन् 1947 में देश का बँटवारा हुआ, उस समय हिन्दु–मुस्लिम दंगे हुए। हमारी पलटन को भी व्यवस्था कायम करने के लिए लगाया गया।

उस समय हमने बहुत से मुसलमानों की रक्षा करके उन्हें सुरक्षित सीमा पार पहुँचाया और उनकी सम्पत्ति लुटने से बचाई। उस समय कट्टर सिक्ख भाईयों के मन में यह विचार था कि इन मुसलमानों ने हमारे गुरुओं को तंग किया था और उनके बच्चों का कत्ल किया था। मैंने उन सिक्ख भाईयों को प्यार से समझाया, ''यह तो उस समय के मुगल शासकों ने किया था, इन बेचारे मुसलमान भाईयों का क्या कसूर है?''

हमारा एक कमांडर भी मुसलमान था, हमने उसके परिवार की रक्षा की और उसे सुरक्षित पाकिस्तान पहुँचने में मदद की। जब वह मुझसे विदा लेने लगा तो उसकी आँखें श्रद्धा से भर आई और उसने कहा, ''सन्त जी, आपके अंदर मुझे खुदा का नूर दिखाई देता है।'' मैंने उसे प्यार से विदाई देते हुए कहा, ''साहब, मैंने आपके ऊपर कोई अहसान नहीं किया, मैंने तो सिर्फ अपना फर्ज पूरा किया है।''

देश आजाद होने पर रियासतें खत्म हो गई। मैं पटियाला रियासत की सेना में था। उस समय सरकार ने यह विकल्प रखा कि जो सेना में रहना चाहें वे भारतीय सेना में भर्ती हो जाएं और जो घर जाना चाहे वे ग्रेचुअटी लेकर घर जा सकते हैं। मैं फौज से सेवानिवृत हो गया।

मेरी खोज जारी रही, मैं अनेक महात्माओं से मिला लेकिन मुझे किसी में भी बाबा बिशनदास जी जैसे गुण नहीं मिले। मैं बाबा बिशनदास जी के चरणों में रहना चाहता था ताकि मेरा उद्धार हो सके लेकिन विधि को कुछ और ही मंजूर था। बाबा बिशनदास जी ने मुझे घर जाकर अपने माता–पिता का बोझ ढोने और उनकी सेवा करने का आदेश दिया। पहले तो मैंने यह स्वीकार नहीं किया लेकिन जब बाबा बिशनदास जी ने मुझे मेरे पिछले जन्म के बारे में बताया और पिछले जन्म की हड्डियाँ भी निकालकर दिखाई तो मैं चुपचाप अपने घर की तरफ चल पड़ा।

***

RNI No - RAJHIN/2003/9899

सतगुरु डोर ढीली तो कर देते हैं लेकिन हाथ से नहीं छोड़ते और हमारा इंतजार करते हैं, वे हमेशा हमें माफ करते हैं। जिस तरह सतगुरु धैर्य से काम लेते हैं उसी तरह हमें धैर्य से काम लेना चाहिए। अगर हमारा बच्चा कोई गलती करे तो हमें भी उसे माफ कर देना चाहिए क्योंकि बच्चे भोले होते हैं। हमें धैर्य से बच्चों का पालन-पोषण करना चाहिए।